दादा भगवान परिवार का
फरवरी २०२२
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

We Are One!

संपादकीय

मित्रों,

संस्कृत में एक वाक्य है, 'संहतिः कार्यसाधिका'। यानी कि एकता से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। क्या आप पक्षियों और शिकारी की कहानी जानते हैं? शिकारी ने पक्षियों को पकड़ने के लिए एक जाल बिछाया। जाल में फँसे हुए पक्षियों ने एक साथ मिलकर ज़ोर लगाया और जाल को लेकर उड़ गए और सभी की जान बच गई। एकता में ऐसा बल है, कि जिसके आधार से बड़ी से बड़ी मुसीबत में से भी पार निकला जा सकता है।

एकता बनाएं रखने के लिए हमारे पास क्या समझ होनी चाहिए? यदि एकजुट होकर नहीं रहेंगे तो क्या होगा? क्या मुसीबत के समय एकजुट रहना आसान है? किन परिस्थितियों में नहीं रह पाती? चलो, ज्ञानियों की दृष्टि से इन सभी प्रश्नों के समाधान प्राप्त करें और निश्चय करें कि इस तरह एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर एकजुट से रहेंगे जिससे किसी भी मुसीबत का सामना कर सकें।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १५ अंक : १०
अखंड क्रमांक : १०७
फरवरी २०२२

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

ज्ञानी कहते हैं...

संकट के समय एकता क्यों बढ़ जाती है?

मुसीबत आने पर सब एक हो जाते हैं। सुरत में जब बाढ़ आई थी, तब सब लोग एक हो गए थे। बाढ़ के चले जाने पर स्वार्थ वापिस आ गया। मुसीबत के समय एक होकर ही रहना चाहिए। इस समय भेदभाव करने से दुःख बढ़ जाते हैं। संकट के समय स्वार्थ बुद्धि नहीं होती है। उस समय तो हर किसी के मन में यही भावना होती है कि सभी बच जाएँ तो अच्छा है। इसलिए संकट के समय सब एक हो जाते हैं।

एकता कब बनी रह सकती है?

- एक-दूसरे की गलतियाँ न निकालें,
- एक-दूसरे के नेगटिव न देखें,
- अपने स्वार्थ, लाभ या फायदे के बारे में नहीं सोचें,
- दूसरों के सुख के बारे में सोचें, तो मिलजुलकर एकजुट रह सकते हैं।

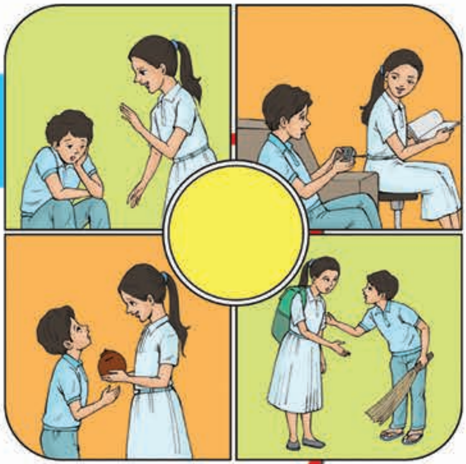

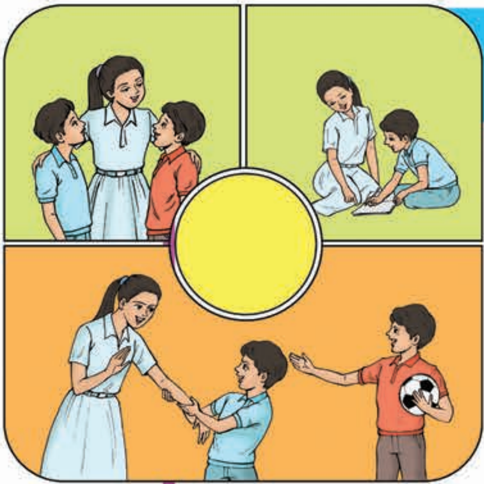

सामान्य परिस्थिति में भी एकजुट रहने के लिए क्या करना चाहिए?

- एकजुट रहना है ऐसा निश्चय करना चाहिए।
- एक-दूसरे के पूरक बनकर (हेल्पफूल) रहना चाहिए।
- अगर एक-दूसरे को अनुकूल ना हों तो एडजस्टमेन्ट लेना चाहिए।

एक-दूसरे के साथ एडजस्टमेन्ट लेने से आनंद में और सुखी रह सकते हैं।

यह तो नई ही बात है!

अगर दो में से एक संबंध तोड़ने की कोशिश करता है तो दूसरे को उसे जोड़ लेना चाहिए, तो ही संबंध निभेगा और शांति रहेगी।

उदाहरण के तौर पर: कोई फ्रेन्ड हमारे साथ झगड़ा करे, मतलब कि फ्रेन्डशिप तोड़ने आए, तब हमें झगड़ा किए बिना एडजस्ट होकर फ्रेन्डशिप बनाए रखनी चाहिए।

भेद पड़ने का क्या कारण है? ये मेरा है और यह तुम्हारा, मैं सही हूँ और तुम गलत, मैं अच्छा हूँ और तुम बुरे, मैं बड़ा हूँ और तुम छोटे!

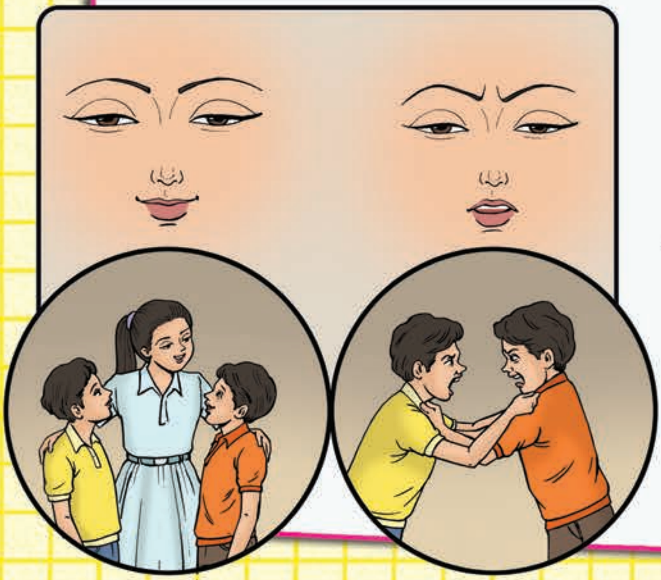

भगवान तो इतना ही देखते हैं कि इस घर में एकता है या क्लेश है! यदि क्लेश है तो मैं नहीं रहना चाहता और अगर एकता है तो जाना नहीं चाहता।

पाच जन मिलजुलकर कोई भी कार्य किया जाए, वह सफल होता है।

क्रेज़ी मेलडी
रेड सिग्नल होते ही मौसिकी ने कार को ब्रेक मारा। ट्रैफ़िक बहुत ज्यादा था। उसने रेडियो ऑन किया।
रेडियो पर
और नाइन्टी फोर पॉइन्ट थ्री पर अगला गाना है, 'द क्रेज़ी मेलडी' बैन्ड का मशहूर और लोकप्रिय साँग, "डार्क चॉकलेट...."
यह गाना सुनकर मौसिकी भूतकाल में पहुँच गई।
यार मॉस, ये वर्ड्स कुछ जम नहीं रहे। हाउ अबाउट, हम इसके बदले 'डार्क चॉकलेट' रखते हैं।
परफेक्ट ! लेट्स गो विथ इट !
एरिका ने गिटार पर ट्यून सेट की। और मीरा ने पियानो रेडी किया।

उस दिन कॉफी शॉप में 'डार्क चॉकलेट' साँग का पहला परफॉरमेन्स था। ऑडियन्स ने साँग की बहुत तारीफ की।
'द क्रेज़ी मेलडी' बैन्ड रातोंरात पॉप्यूलर हो गया।
वी रॉक गर्ल्स! अब हमें काम ढूँढने के लिए कहीं जाना नहीं पड़ेगा, सामने से ऑफर आएँगे।
पीछे से गाड़ियों के हॉर्न की आवाज सुनाई दी और मौसिकी वर्तमान में लौट आई। स्टॉप लाइट पर ग्रीन सिग्नल हो गया था।
कितने शानदार थे वे दिन ! एक-दूसरे के साथ मिलकर म्यूज़िक क्रिएट करने का मज़ा ही कुछ और था। मैंने क्यों ऐसी बेवकूफी की!

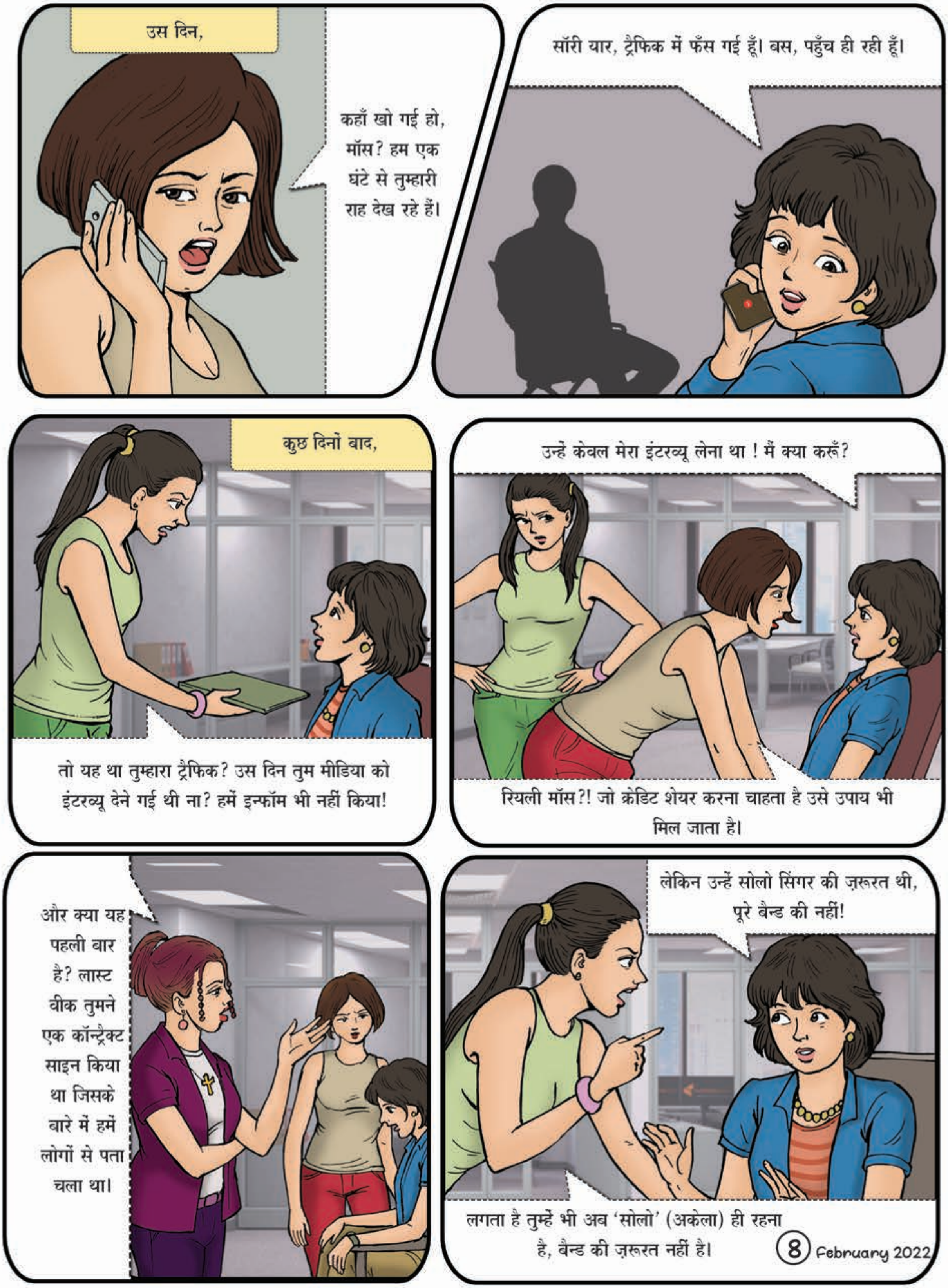
उस दिन,
कहाँ खो गई हो, मॉस? हम एक घंटे से तुम्हारी राह देख रहे हैं।
सॉरी यार, ट्रैफिक में फँस गई हूँ। बस, पहुँच ही रही हूँ।
कुछ दिनों बाद,
तो यह था तुम्हारा ट्रैफिक? उस दिन तुम मीडिया को इंटरव्यू देने गई थी ना? हमें इन्फॉम भी नहीं किया!
उन्हें केवल मेरा इंटरव्यू लेना था ! मैं क्या करूँ?
रियली मॉस?! जो क्रेडिट शेयर करना चाहता है उसे उपाय भी मिल जाता है।
और क्या यह पहली बार है? लास्ट वीक तुमने एक कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था जिसके बारे में हमें लोगों से पता चला था।
लेकिन उन्हें सोलो सिंगर की ज़रूरत थी, पूरे बैन्ड की नहीं!
लगता है तुम्हें भी अब 'सोलो' (अकेला) ही रहना है, बैन्ड की ज़रूरत नहीं है।

प्लीज!! जब हमारे पास कुछ भी नहीं था तब हम कितनी अच्छी तरह मिलजुलकर म्यूज़िक क्रिएट करते थे। आज जब हमारे पास सब कुछ है तो ऐसी फाइट्स क्यों?
फाइट तुम लोगों ने शुरू की है। ऐन्ड यू आर राइट, मुझे बैन्ड की ज़रूरत नहीं है।
बैन्ड छोड़ने के बाद लगा था कि अच्छा सा अपना सिंगिग करियर बनाऊँगी। गाना भी छूट गया और खुशीयाँ भी चली गईं।
घर लौटते समय मौसिकी ने फिर से गाड़ी में रेडियो ऑन किया,
मैं हूँ, आर.जे. विनी... चलो, एक कहानी सुनाती हूँ। एक आदमी को अंगूर खरीदने थे। उसने दुकानदार से अंगूर के गुच्छों का भाव पूछा।
यह १०० रुपये किलो और गुच्छों से टूटकर अलग हुए इन अंगूर के ३० रुपये किलो!
इतना फर्क क्यों?
साहब, अंगूर तो ये भी बढ़िया हैं। पर गुच्छों से टूटकर अलग हो गए हैं।
अगर हम भी अपने परिवार या फ्रेन्ड्स के गुच्छे से अलग हो जाते हैं तो हमारी कीमत भी कम हो जाती है। टूटे हुए संबंधो को फिर से जोड़ लें, परिवार तथा फ्रेन्ड्स से हमेशा जुड़े रहें!
मौसिकी ने 'क्रेज़ी मेलडी' बैन्ड की वेबसाइट पर जाकर उनका कॉन्टैक्ट नंबर ढूँढा। और दोबारा अपने गुच्छे से जुड़ने के लिए नंबर डायल किया।

जीवंत उदाहरण
उबंटू

एक वैज्ञानिक अपनी शोध करने के लिए अफ्रीका के जंगलों में गए। उन्होंने वहाँ के बच्चों के साथ रिसर्च करने का फैसला किया। उस रिसर्च के लिए उन्होंने एक खेल का आयोजन किया। एक पेड़ के पास उन्होंने एक बास्केट रखी। बास्केट चॉकलेट्स से भरी थी। उन्होंने बच्चों को चॉकलेट्स और पेड़ से सौ मीटर की दूरी पर खड़े रहने को कहा। और कहा कि जब मैं रूमाल हिलाऊँतब तुम सब बास्केट की तरफ दौड़ना। जो सबसे पहले बास्केट के पास पहुँचेगा, सारी चॉकलेट्स उसी को मिलेंगी।

वैज्ञानिक ने रूमाल हिलाया और फिर जो हुआ उसे देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। सभी बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर एक साथ बास्केट की तरफ दौड़े। बास्केट के पास पहुँचकर, उन्होंने चॉकलेट्स को बराबर हिस्सों में बाँटा और खुशी-खुशी खाने लगे। वैज्ञानिक ने बच्चों से पूछा, "तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया?" तुम लोगों में से कोई एक पहले पहुँच जाता तो सारी चॉकलेट्स जीत लेता! बच्चों ने कहा, "किसी एक को खुशी मिले और बाकी सब दुःखी हो जाएँ ऐसा कैसे कर सकते हैं!"

अफ्रीका की इस ट्राईब में एक समझ है जिसे उबंटू कहा जाता है। उबंटू का अर्थ है, **"I am because we are"** : "मैं हूँ क्योंकि हम हैं" जब दूसरे दुःखी हों तो कोई एक कैसे खुश रह सकता है?!

लामा & यामा

फरवरी २०२१, पढ़-पढ़, लेकिन क्यों इस अक्रम एक्सप्रेस अंक को पढ़कर-समझकर और उसका सार निकालकर आपकी उम्र के बच्चे ने एक सुंदर मज़ेदार काल्पनिक कहानी लिखी है। चलों, इस कहानी का मज़ा लेते हैं।

युरेनस ग्रह पर फातीर परिवार रहता था। इस परिवार में गुजल फातीर, उसकी पत्नी हुनाली फातीर और उनकी दो जुड़वा बेटी लामा और यामा फातीर थी।

ये जुड़वा बहनें पढ़ाई में टापर थीं। लेकिन दोनों का तरीका अलग था। यामा को स्टडी करने के बजाय ज्यादा मार्क्स लाने में रूचि थी जबकि लामा को समझ बढ़ाने में रूचि थी। लामा हर एक शब्दों का स्टडी करती और लाइब्रेरी की अन्य किताबें भी पढ़ती थी। जबकि दूसरी तरफ यामा क्विज़ में जितना पूछा जाने वाला हो उतना ही पढ़ती थी।

एक बार एक परिक्षा में लामा की एक छोटी सी भूल के कारण लामा को यामा से कम मार्क्स मिले। लामा निराश हो गई। पर यामा तो अपने मार्क्स से बहुत खुश थी।

शाम को वे दोनों 'हसीना' मॉल में गईं। उनके परिवार का रिवाज़ था कि दोनों में से जो प्रथम आए उसे मॉल जाकर जो खरीदना हो खरीद सकती हैं।

यामा एक दुकान में कपड़ा खरीदने गई और लामा हर बार की तरह बुकस्टोर में गई। कुछ खरीदने के लिए नहीं परंतु बुक्स से उसे एक प्रकार की हूँफ मिलती थी। बुकस्टोर में एक क्विज़ आयोजित की गई थी। लामा, यामा को बुलाकर लाई और दोनों ने क्विज़ में भाग लिया।

क्विज़ के प्रश्न यामा ने टेक्सबुक्स में कभी पढ़ा नहीं था। इसलिए उसे क्विज़ बहुत कठिन लगी। लेकिन लामा को क्विज़ एकदम सरल लगी क्योंकि उसने वह प्रश्न दूसरी बुक्स में पढ़ा था।

लामा क्विज़ जीत गई। उसे इनाम में बुक्स मिली जो उसने यामा के साथ शेयर की। यह देखकर यामा को समझ में आया कि हमें स्टडी सिर्फ परीक्षा के लिए ही नहीं बल्कि कुछ सीखने के लिए भी करनी चाहिए। ज्यादा सीखा हुआ कभी बेकार नहीं जाता बल्कि सही वक्त में प्रश्नों और उलझनों को सॉल्व करने में मदद करता है।

साथ है तो बात है

पहाड़ों के बीच में स्थित 'साथ है तो बात है' नाम के अनाथालय में सन्नाटा छाया हुआ था। किचिन में हर जगह खाना बिखरा पड़ा था। ज़मीन पर पूरी के टुकड़े बिखरे हुए थे, छाछ और दाल की नदियाँ बह रही थीं। महाराज अपना सामान पैक कर रहे थे।

महाराज : धीरजभाई, मुझसे नहीं होगा।

धीरजभाई : मैं समझ सकता हूँ !

महाराज : आपके लड़के शैतान हैं। ऐसे कारस्तानी बच्चे हैं इसलिए तो आपके यहाँ कोई महाराज टिकता नहीं है।

धीरजभाई : फिर भी, आप पूरा एक महीना तो टिके, बाकी सब तो ५ दिन में ही चले जाते हैं।

धीरजभाई के ऑफिस के बाहर सभी बीस बच्चे मुँह नीचे किये खड़े थे। कुछ देर पहले ही 'रॉकस्टार' की टीम तथा 'देशी बॉइस' की टीम ने झगड़ा करके रसोई को युद्ध का मैदान बना दिया था। सबके कपड़ों पर लगे दाल के दाग ताज़ा ही थे। अरे, ७ वर्ष के मिहिर और राजू के बालों में तो पापड़ के टुकड़े भी लगे थे।

मिहिर और राजू को अनाथालय में आए २ महीने हो गए थे। अनाथालय में कई सालों से यह रिवाज रहा है कि शहर से आए हुए बच्चे रॉकस्टार टीम में शामिल होते हैं और गाँव से आए बच्चे देशी बॉइस का हिस्सा बनते हैं।

रॉकस्टार और देशी बॉइस के बीच कट्टर दुश्मनी थी लेकिन धीरज काका तो सबको प्रिय थे। बच्चे चाहे कितना भी लड़ाई-झगड़ा करें या नुकसान करें लेकिन धीरज काका ने कभी किसी को कुछ नहीं कहा। काका सभी बच्चों को इतना लाड़-प्यार से रखते थे कि अनाथालय के किसी भी बच्चे को कभी भी अपने मम्मी-पापा की कमी महसूस नहीं हुई।

धीरज काका ने ऑफिस के बाहर आकर, बच्चों की तरफ देखे बिना बबलू से कहा, 'बबलू, आज सबको पॉकिट मनी दे देना। सब मार्केट जाकर कुछ खा लेंगे।'

यह सुनकर देशी बॉयस का टीम लीडर बैजू बोल उठा, "काका, आप भी हमारे साथ चलिए। वैसी भी देशी बॉइस के साथ ही आपको सबसे अच्छा स्ट्रीट फूड खाने मिलेगा।"

लेकिन बिना कुछ कहे ही काका अपने रूम में चले गए।

"ज्यादा होशियारी बताने वाले देशी बॉइस को काका ने भाव नहीं दिया।" रॉकस्टार टीम के लीडर सिद्धार्थ ने हँसते हुए कहा, "चलो, हम लौटते समय काका के लिए मंचूरियन और मैगी लेते आएँगे।"

लेकिन जब रॉकस्टार की टीम खाना लेकर आई तब काका ने कहा, "बबलू, तुम खा लेना, मुझे आज खाना नहीं खाना।"

धीरज काका नाराज़ थे। आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ था कि उन्होंने खाना न खाया हो।

धीरज काका भूखे हैं इस बात ने किसी को सोने नहीं दिया। सुबह-सुबह बबलू ने आवाज़ दी, "काका ने कहा है कि सब तैयार होकर ९ बजे तक रसोई में आ जाना।"

सुबह के नाश्ते में सबका फेवरिट खाना ब्रेड-बटर और समोसा था। सबने पेट भरकर खाया। बबलू ने काका से पूछा, "काका, आपको नाश्ते में क्या दूँ?"

"कुछ नहीं बबलू, मुझे भूख नहीं है।" धीरज काका ने कहा। यह सुनते ही सबके हाथ वहीं रुक गए। "काका फिर से खाने के लिए मना कर रहे हैं? कल रात से उन्होंने कुछ खाया नहीं है।" सभी के चहरों पर चिंता छा गई।

"अरे, चिंता मत करो, मैं आज दोपहर को खाऊँगा! क्योंकि मेरे लिए आज दोपहर का खाना तुम लोगों को ही बनाना है। बनाओगे ना?" काका ने पूछा।

"हाँ, काका।" दोनों टीम एक साथ बोल उठीं।

"तो ठीक है बबलू, तुम नोटिस बोर्ड पर लिख देना कि खाना बनाने की कब किसकी बारी है। एक सप्ताह तक तुम लोगों को ही खाना बनाना है। नए महाराज अगले सोमवार को आएँगे।"

काका को मनाने के लिए बच्चे कुछ भी करने को तैयार थे ! लेकिन नोटिस बोर्ड पर नाम देखकर उनका सारा उत्साह जाता रहा।

"हम देशी के साथ काम नहीं करेंगे।" सिद्धार्थ ने कहा।

"हाँ, तो हम भी रॉक के साथ काम नहीं करना चाहते। हम काका के लिए खाना बनाएँगे। तुम लोग रसोई में पैर भी मत रखना!" बैजू बोला।

"सिद्धार्थ भाई, क्या हम ऐसा कर सकते हैं कि आधे किचिन में हम खाना बनाएँ और आधे में बैजूभाई?" मिहिर ने डरते हुए पूछा।

"यह अच्छा आइडिया है। काका ही बताएँगे कि कौन बेस्ट है!" बैजू ने कहा।

और किचिन को दो हिस्सों में बाँटकर दोनों टीम काम पर लग गई।

१२ बजे काका डाइनिंग रूम में आए। देशी बॉइस और रॉकस्टार अपनी-अपनी डिश के साथ तैयार थे। काका दोनों टीम्स को साथ में देखकर खुश हुए। लेकिन तभी काका के लिए दो थालीयाँ परोसी गईं। एक, रॉकस्टार और दूसरी, देशी बॉइस की ओर से!

यह देखकर काका ने पूछा, "क्या तुम लोगों ने मेरी बनाई हुई टीम के अनुसार काम किया?"

"काका, आप चखकर तो देखो!" बैजू बोल पड़ा। "नहीं। धीरज काका, पहले हमारा बनाया खाना तो चखिए, फिर आपको किसी और का बनाया खाना खाने की इच्छा ही नहीं होगी!" सिद्धार्थ बोला।

"बबलू, मेरे लिए खिचड़ी बना कर मेरे रूम में दे देना! और इन लोगों से कह देना कि इनके हाथ का बना खाना मैं तभी खाऊँगा जब ये लोग साथ मिलकर बनाएँगे!"

आगे क्या? एक तरफ काका को मनाना था तो दूसरी तरफ एक-दूसरे का चेहरा देखना भी पसंद नहीं था। आखिरकार काका की खुशी के लिए दोनों गैंग ने काका की बनाई टीम के अनुसार काम करने का निर्णय लिया।

शाम को बैजू और सिद्धार्थ की बारी थी। उनका मेन्यू था, पुलाव और सूप।

रात को आठ बजे काका और बबलू आए और दोनों ने काका की प्लेट में पुलाव और सूप परोसा। दोनों को साथ में देखकर काका को खुशी हुई। उन्होंने प्लेट में से एक चम्मच सूप पीकर कहा, "ओह, टमाटर का सूप तो स्वीट है!"

यह सुनते ही सिद्धार्थ बोला, "मैंने बैजू से कहा था कि सूप में चीनी नहीं डालते लेकिन इस देशी को 'हेल्थी' के बारे में कैसे पता होगा!"

यह सुनकर काका चुपचाप खाना खाकर बिना कुछ कहे अपने रूम में चले गए। "काका, आपको कैसा लगा?" "आप और लोगे?" ऐसे कितने ही सवाल दोनों ने पूछे पर काका ने कोई जवाब नहीं दिया।

दूसरे दिन फिर से वही हुआ, काका के लिए नाश्ते में खमण ढोकला और कढ़ी बनाई थी। काका ने चखकर कहा, "कढ़ी तो बहुत ही अच्छी बनी है!"

यह सुनते ही देशी बॉइस का वर्धमान बोल उठा, "काका, कढ़ी तो मैंने बनाई है!"

और फिर से काका चुपचाप बिना कुछ बोले खाना खाकर चले गए। अगले दो दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। काका खाना चखते, कुछ सवाल पूछते और जैसे ही कोई जवाब देता, काका बिना कुछ बोले चुपचाप खाना खाकर चले जाते।

फिर मिहिर और राजू की बारी आई। दोनों की उम्र सिर्फ सात साल की थी। इसलिए सिद्धार्थ और बैजू को चिंता हो रही थी कि क्या पता वे कैसे खाना बनाएँगे।

और ऐसा ही हुआ। ब्रेड-बटर टोस्ट और जैम सैन्ड्‌विच जैसा सरल मेन्यू था लेकिन जब वे लेकर आए तो एक टोस्ट जल गया था और सैन्ड्‌विच के साइड में जैम नहीं लगा था। काका आकर बैठे। उन्होंने जला हुआ टोस्ट लिया और पूछा, "ये क्या?"

मिहिर बोला, "काका, ये मुझसे जल गया!" तुरंत ही राजू बोला, "नहीं काका, मेरा फॉल्ट था। वह जैम की बॉटल का ढक्कन खोलने में मेरी मदद कर रहा था उतने में जल गया!"

यह सुनकर काका ने जले हुए टोस्ट का एक बाइट लिया और कहा, "बहुत ही टेस्टी है!"

एक और टोस्ट खाने के बाद काका बोले, "यह अच्छा है!" तो मिहिर ने कहा, "काका, यह राजू ने सेका है!" तो राजू ने कहा, "लेकिन इसमें बटर तो मिहिर ने लगाया है!"

यह देखकर काका हँस पड़े और उन्होंने टोस्ट खा लिया। और फिर उन्होंने दोनों से पूछा, "बबलू भाई के पास से तुमने और क्या बनाना सीखा?"

बाकी के बच्चे यह देखते ही रह गए। काका मिहिर और राजू के साथ बातें कर रहे थे। इतना ही नहीं, नाश्ता करने के बाद काका मिहिर और राजू को कहानी सुनाने रूम में ले गए।

बस, फिर तो देशी बॉइस और रॉकस्टार सोचने लगे कि मिहिर और राजू से काका इतने खुश क्यों हैं?

"वे लोग छोटे हैं इसलिए!" या "शायद काका को जले हुए टोस्ट पसंद हैं इसलिए!" "राजू रोने जैसा हो गया था इसलिए!" ऐसे अनेक तुक्के लगने लगे।

यह सब सुनकर बबलू से रहा नहीं गया और उसने उन सब से कहा, "उन लोगों ने साथ में मिलकर काम किया इसलिए काका उनसे खुश हैं! और तुम सबको तो एक-दूसरे से लड़ने से ही फुरसत नहीं मिलती!" इतना कहकर वह चला गया।

"साथ मिलकर किया मतलब क्या?" देशी बॉइस में से एक बोला।

लेकिन सिद्धार्थ और बैजू चुप थे। वे समझ गए कि बबलू क्या कहना चाह रहा है। मिहिर और राजू ने एक साथ मिलकर नाश्ता बनाया था, न केवल साथ काम किया बल्कि एक-दूसरे का ध्यान भी रखा। काम बिगड़ने पर एक-दूसरे को दोष नहीं दिया बल्कि एक साथ जिम्मेदारी ली। और बिगड़ा हुआ काम किस तरह सुधारा जाए इसके बारे में सोचा। और जो काम अच्छा हुआ वह काम 'मैंने अच्छा किया' ऐसा कहने के बजाय 'एक-दूसरे की मदद से हुआ' ऐसा कहा।

सिद्धार्थ और बैजू ने एक-दूसरे की तरफ देखा और किचन में चले गए।

दोपहर में जब काका खाना खाने बैठे, तो सिद्धार्थ ने कहा, "काका, आज तो आपका फेवरिट मैगी और मन्चूरियन बनाया है!"

काका ने पूछा, "किसने?"

बैजू ने हँसते हुए सिद्धार्थ के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "हम दोनों ने, काका!"

काका के चेहरे पर मुस्कान आ गई और वे बोले, "कल नए महाराज आ रहे हैं! उनको कितने समय तक टिकने दोगे?"

"काका, कैसी बात कर रहे हो? क्या हम महाराज को परेशान करते हैं? ऐसा हो ही नहीं सकता!" सिद्धार्थ ने हँसकर जवाब दिया।

और तब से ही 'साथ है तो बात है' में दो गैंग मिटकर एक बड़ी गैंग बन गई। लेकिन बच्चे अभी भी नए महाराज को परेशान करके भगा देते हैं, पर धीरज काका की हर बात मानते हैं और एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहते हैं।

ANIMAL WORLD

मीरकैट एक प्रकार का मंगूस (नेवला) है। वो हमेशा फैमिली ग्रुप में ही रहते हैं। एक मीरकैट फैमिली में लगभग २० से ५० मीरकैट होते हैं। मीरकैट की खासियत यह है कि उनमें कोई विशेष शारीरिक शक्तियाँ नहीं होतीं लेकिन फिर भी वे अपनी एकता के कारण जंगल में सिंह और बाघ जैसे हिंसक प्राणियों से भी बचे रहते हैं। खाना ढूँढने के लिए पूरी फैमिली एक साथ निकलती है। जब सभी खाना ढूँढने निकलते हैं तब एक मीरकैट हमेशा दूर खड़ा रहकर चौकीदारी करता है। और कोई खतरा दिखने पर वार्निंग सिग्नल देता है जिसे सुनकर सब मीरकैट छिप जाते हैं।

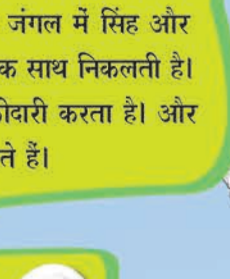

हंसो की टोली को आपने 'वी' आकार में उड़ते तो देखा ही होगा?
यदि नोक पर उड़ने वाला पक्षी थक जाता है तो दूसरा पक्षी तुरंत उसकी जगह ले लेता है! टीम में सभी एक दूसरे का ध्यान रखते हैं और एक-दूसरे का काम करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं!

प्राणी जगत में मधुमक्खियों की एकता और टीम वर्क की खूब प्रशंसा की जाती है। इसके पीछे कारण यह है कि हर एक मधुमक्खी का काम अलग-अलग होता है। और सभी अपना काम बहुत सिन्सियरली करती हैं। गरमी के दिनों में मधुमक्खी के छत्ते के अंदर का वातावरण ठंडा होता है और तब मधुमक्खियों का एक गूप छत्ते में रहता है और दूसरा गूप काम करने बाहर जाता है। ऐसे सभी मधुमक्खियाँ बारी-बारी से कठिन और सरल, दोनों तरह के काम करती हैं। और इस प्रकार, वे मिलजुलकर काम करके सफलता पाती हैं।

हाथी एक-दूसरे की फीलिंग्स समझते हैं और एक-दूसरे की केअर भी करते हैं। यदि कोई हाथी अपसेट हो जाता है तो हाथियों का झुंड तरह-तरह की आवाजें निकालकर उसे खुश करने में लग जाता है। जब किसी हाथी को चोट लग जाती है तब सब हाथी मिलकर उसके घाव पर रेत डालकर उसे शांत करते हैं। जब हाथी के बच्चे का जन्म होता है तब सब हाथी मिलकर सेलिब्रेट करते हैं।

जंगल–जंगल पता चला है, पता चला है...

क्या पता चला है? पता तो हमें चलाना है! नीचे बने हुए जंगल के दृश्य में कुछ ऐसे ऐनिमल्स छिपे हुए हैं जो एकतापूर्वक काम करते हैं और 'ऐनिमल वर्ल्ड' सेक्शन में उनकी विशेषता दिखाई गई है। तो चलो, नीचे दिए गए चित्र में से ६ हाथी, ५ मीरकैट और ८ हंस ढूंढें...

AALOO CHILLY
Today's Spical:
जंगल परतंत्रता दिवस
आप सोच रहे होंगे की सब तो स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, तो ये आलु और चिली परतंत्रता दिवस क्यों मना रहे हैं? कुछ साल पहले एक अनोखी घटना हुई थी!
उस समय नदी के पश्चिम की तरफ जानवर रहते थे और पूर्व की तरफ पक्षी...
आलु और मैं उस समय फ्रेन्ड्स नहीं थे। हम एक-दूसरे से बात भी नहीं करते थे!
एक दिन जंगल में जानलेवा आग लगी।
आग में हमारे घोसले जल रहे थे! तब मैं तो बहुत छोटा था!
मैंने तो उड़ना भी नहीं सीखा था। हमारे पेरेन्ट्स चिंतित हो गए कि हमारा क्या होगा।

मेरे पापा नदी किनारे गए और उन्होंने सभी पक्षियों को हमारे साथ रहने के लिए बुला लिया!
उस दिन मैंने पहली बार आलु की पीठ पर सवारी की!
धीरे-धीरे खाना कम पड़ने लगा।
लेकिन हमारी फैमिली इतनी बड़ी हो गई कि ...
इसलिए मम्मी-पापा रोज़ एक बड़ी नेट लेकर फूड लेने जाते!
और मा और पा हमारा ध्यान रखते और टेस्टी खाना बनाकर हमें खिलाते!
उस दिन हमने तय किया कि संकट के समय हम हमेशा एक-दूसरे के लिए हाज़िर रहेंगे और एक-दूसरे का ध्यान रखेंगे!
और इसलिए, हम परतंत्रता दिवस मनाते हैं।

Akram Express
February 2022
Year : 15, Issue : 10
Conti. Issue No.: 107

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Find it

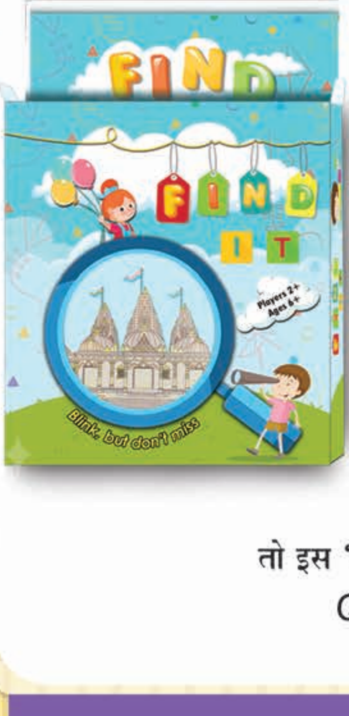

'find it'... एक अनोखी कार्ड गेम... जिसमें है "पहला वहीं पहला" की जीत...! तो गेम का चैलेन्ज स्वीकार करो और जल्दी पाओ... 'find it' गेम का पेक !!

तो इस 'find it' game पाने के लिए
QR Code Scan करें।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।
१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025